पर गोपिन के सामने, चली न एकहू बात।।
उघौ सूधौ है गयौ, सुन गोपिन के बोल।
ज्ञान बजाई दुन्दुभी, तो प्रेम बजायौ ढोल।।

सखी सपना–अरी सखियों चौं रो रही हौ। देखौ तौ सही श्याम सुन्दर के सखा उद्धव जी आये हैं।

सखी प्रार्थना–कहा कही श्यामसुन्दर के सखा कितकू हैं दिखा तौ सही।

सखी सपना–ये देखौ ये हैं उद्धव जी, बोलो ना उद्धव जी।

उद्धवजी–हॉ मैं श्याम सुन्दर कौ सखा हूँ तुमसौ मिलवे कू आयौ हूँ। श्यामसुन्दर कौ सन्देसौ लायौ हूँ। रे विनकी पाती हू लायौ हूँ।

कहन श्याम सन्देस एक मैं तुमपे आयौ,
कहन समय संकेत कहू औसर नहीं पायौ,
सोचत ही मन में रहयौ कब पाउँ इत ठाउँ,
कह संदेस नन्दलाल कौ बहुरि मधुपुरी जाउँ।
सुनौ ब्रजनागरी,सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी, सुनौ ब्रजनागरी।

राधाजी–पाती हमारे प्यारे श्यामसुन्दर की।

उद्धवजी–हॉ श्यामसुन्दर की।

सखी प्रिया–उद्धव जी सांची सांची बताओ हमारे कन्हैया कू हमारी याद आवै का।

उद्धवजी–तमई तौ श्यामसुन्दर की पाती लायौ हूँ।

सखी महिमा–अरी हमपै तौ पढ़वौ लिखवौ आवै नाए, हमें तौ जे बताए देओ कि हमकू का लिखौ है हमारे कान्हा नै।
उद्धवजी–अरी बाबरियों काहे कू झगड़ रही हौ। तुम वा अहीर के छोरा के काजै काहे कू पागल है रही हौ। वो तौ अहीर कौ छोरा है अहीर कौ छोरा। अरे तुम अपनौ कल्याण चाहौ तौ या प्रेम के पागलपन कू छोड़ ज्ञान ते ध्यान लगाओ, योग कू अपनाओ।

सखी प्राची–ज्ञान और जोग जे का होए है हम तौ तुमही से सुन रही हैं। या ज्ञान की कौन तो मइया है और याकौ बाप हैं।
उद्धव जी–अरी गोपियों ज्ञान तौ सूर्य के समान है सूर्य ते जैसे अन्धेरौ दूर है जाय है ऐसे ही ज्ञान ते अज्ञान दूर है जाये है। प्रेम तौ जुगनू के समान होए है।

सखी प्रियंका–उद्धव जी तुम्हारे योग के सन्देस कू सुनके हमारौ हृदय किरच–किरच है रहयौ है। पहले तौ एक ही मन मोहन दिखायी पड़तो अब तौ अनेक मनमोहन दिखायी पड़ रहे हैं।

उद्धव–सखियो हृदय तौ एक ही है याके टुकड़ा नाए है सकें। या बात कू मैं नाए मानू। और याही कारण सू मैं आप सबकू समझाउँ कै आप अपने मन कू ईश्वर की आराधना में लगाओ। ध्यान और योग कौ पालन करौ।

राधाजी–(गीत) उघौ मन नाही दस बीस।

उद्धवजी–गोपियो मेरी या बात कू मानौ निर्गुण ब्रहम की आराधना करौ।